Course-07 a. Pedagogy Of Social Science-

Unit-1-c-Topic:- B.C.F. 2008

Bihar Curriculum (Framework

Framework-2008

"बिहार पाठ्य-चर्या-प्रारूप-2008"

'बिहार पाठ्य-क्रम-प्रारूप-2008 से सम्बन्धित बातें जो इसकी (आवश्यकता) एवं उद्देश्यों का विवरण देता है वह निम्न रूप में देखा जा सकता है-

वर्तमानकाल में 'सब के लिए शिक्षा' अर्थात सर्व शिक्षा अभियान (S.S.A.), जिसके अन्तर्गत अनुसूचित जाति-जनजाति के बालक-बालिकाओं की शिक्षा के साथ-साथ अन्य उपेक्षित व वंचित तथा अल्पसंख्यक बालक-बालिकाओं की शिक्षा के लिए अनेक किस्म के शैक्षिक कार्यक्रम चला रहे हैं। इसका लाभ कुछ गिने-चुने लोगों को मिले भी हैं। किन्तु इन स्थितियों में भी शिक्षा सिर्फ जीविकोपार्जन का साधन/माध्यम बनी हुई है और बाजार मूल्य के अनुरूप शैक्षिक कार्य हो रहे हैं।

फलतः शिक्षा व्यवस्था के ऊपर सरकार का पूर्ण अधिपत्य हो गया है जो शिक्षा व्यवस्था का केन्द्रीयकरण किया है। यद्यपि सरकारी, गैरसरकारी, सामाजिक तथा धार्मिक शैक्षिक संस्थाओं के साथ-साथ चलने से शिक्षा का विकेन्द्रीकरण भी दिखाई देता है। परंतु फिर भी केन्द्रीकृत शिक्षा व्यवस्था बनी हुई है। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए

P.T.O-

सन् 2005 ई० में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या-2005 (NCF-2005) की अनुशंसाएँ प्रकाश में आई व इस आधार पर राष्ट्रीय-पाठ्यचर्या को 'राष्ट्रीय शिक्षा-प्रणाली' के विकास हेतु तैयार किया गया तथा लक्ष्य के रूप में राष्ट्रीय लक्ष्यों (Aims) को सामने रखा गया।

BCF-2008-बिहार पाठ्यचर्या-2008 भी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या-2005 से अनुप्रेरित है। अर्थात इसकी BCF-2008 का भी लक्ष्य एवं शिक्षा-प्रणाली का प्रारूप वही है जो NCF-2005 का है। फिर भी क्षेत्रीय स्वरूपभिन्नता के कारण राष्ट्रीय लक्ष्यों के अतिरिक्त क्षेत्रीय आवश्यकताओं पर ध्यान देना आवश्यक होता है और अतः इसमें मुख्यतः शिक्षा के उन सामाजिक परिस्थितियों पर प्रकाश डाला गया है, जिसमें बच्चे सामाजिक व्यक्तिगत व सामाजिक स्तर पर विकास के अवसर पाते हैं। इसमें मूलरूप से यह बात कही गयी है कि समाज का विकास तभी होता है जब उसके बहुसंख्यक लोग स्कूली शिक्षा ग्रहण करते हैं। विद्यालय मूल्य हस्तान्तरण (transfer) का साधन भी बन जाते हैं और वे संवैधानिक मूल्यों जैसे- समानता, न्याय, धर्मनिरपेक्षता, सामाजिक मूल्यों मूल्य आदि के हस्तान्तरण के अवसर भी देते हैं।

जहाँ तक शिक्षा की के उद्देश्य की बात है तो NCF-2005 और B.C.F-2008 में वर्णित उद्देश्यों में लगभग समानता है फिर भी यह प्रश्न उठता है कि जब राष्ट्रीय स्तर की पाठ्यचर्या रूपरेखा-2005 अस्तित्व में थी तो राज्यस्तरीय पाठ्यचर्या-2008

P.T.O.-

की आवश्यकता क्यों पड़ी ;

उपरोक्त प्रश्न का उत्तर देने के लिये हमें मुख्यतः बिहार के सन्दर्भ में तत्कालीन समाज की समीक्षा करनी होगी। बिहार की संस्कृति/समाज में विभिन्न संस्कृतियाँ, जाति व धर्म व आर्थिक वर्ग है और सम्पूर्ण समाज के लिए राष्ट्रीकृत पाठ्यचर्या के निर्देशों के अनुसार शिक्षा के समान अवसर प्रदान करना सम्भव नहीं था क्योंकि जहाँ जाति के स्तरीकरण, आर्थिक स्तर, सांस्कृतिक विभिन्नता, लिंग, भौगोलिक स्थिति व विभिन्न शक्तिशाली समूह व्याप्त थे।

अतः उपरोक्त चुनौतियों के समाधान के उद्देश्य से B.C.F.-2008 को बनाया गया ताकि शिक्षा के के सामाजिक सन्दर्भ में उठनेवाली चुनौतियों को नियोजन व कार्यान्वयन के स्तर पर समाधान किया जा सके अथवा सुलझाया जा सके। बिहार की साक्षरता दर भी राष्ट्रीय स्तर के मुकाबले बहुत कम थी। अतः बहुत बड़ी संख्या में विद्यालय जानेवाले बच्चे बड़ी उम्र के थे और वे विभिन्न भाषाएँ बोलते थे। सामाजिक सन्दर्भ में अन्य चुनौतियाँ यथा — (1) जनसंख्या का आधिक्य, (2) ढाँचागत सुविधाओं की कमी, (3) उत्तरी बिहार में प्राकृतिक आपदा-बाढ़, (4) अत्यधिक लैंगिक भेद-भाव इत्यादि मुख्य विषय थे जिनसे निपटने के लिए अतिरिक्त ध्यान देने की आवश्यकता थी फलतः B.C.F. 2008 अस्तित्व में आया ~~जिसके~~

P.T.O. —

जिसमें दो बातों पर मुख्यरूप से बल दिया गया था — (1) मूल्य व आदर्श तथा (2) व्यक्तिगत योग्यता पर बल देना।

(1) मूल्य व आदर्श — शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का साधन है। अतः शिक्षा द्वारा समाज में स्थिति व अवसर की समानता, विचार व अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता, विश्वास, धर्म व पूजा को जीवन के मूल्य के रूप में लेना, मानसिक स्वायत्तता, स्वतन्त्रता व तर्काधारित स्वायत्तता चयन की स्वतन्त्रता, निर्णय निर्णय करने की योग्यता व कार्य करने की स्वतन्त्रता के साथ-साथ दूसरों का सम्मान करना, दूसरों का भला चाहना, उनके लिये संवेदनशील रहना व सामाजिक आर्थिक व राजनैतिक न्याय पर बल दिया गया है।

(2) व्यक्तिगत योग्यताओं पर बल — इन सभी प्रावधानों के बावजूद यह समाचार लगातार आता रहा है कि बिहार पाठ्यचर्या-2008 में समान स्कूली प्रणाली की पूर्णतः उपेक्षा हुई है व इस तरह की शैक्षिक गतिविधियों में साम्प्रदायिक मानव निर्मित होने की आशंका है। शिक्षक खास, शिक्षक समुदाय, शिक्षक-शिक्षाशास्त्री, प्राथमिक, माध्यमिक, व उच्च शिक्षा के शिक्षक सब स्वतन्त्र इकाय के स्तर पर अलग काय कर रहे हैं। इन कारणों से शिक्षा के लिए पूँजी की हानि दिखाई देती है। अतः इससे शिक्षा के मूल्य में ह्रास होगा। शैक्षिक कार्यक्रम में सामाजिक मूल्य अप्रासंगिक हो गये हैं और शिक्षा व्यवस्था में सामाजिक दृष्टिकोण की जगह व्यक्तिवादी दृष्टिकोण स्थापित हो गया है, मूल्य का औचित्य समाप्त हो गया है तथा सामाजिक मूल्यों के अप्रासंगिक होने से शिक्षा व्यवस्था में सामाजिक प्रक्रिया बन्द हो गई है।